सीरत-ए-औलिया-ए-किराम

शैख सलीम चिश्ती की सीरत

मुसन्निफ़ः
मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी फतेहपुरी



मकतबा दारुस्सुन्ना
आगरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शैखुल इस्लाम हज़रत शैख सलीम चिश्ती

रहमतुल्लाह अलैह

की हिस्ट्री पर मुश्तमिल किताब बनाम:

शैख सलीम चिश्ती की प्यारी सीरत

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

सीरत हज़रत शैख सलीम चिश्ती
दरगाह शरीफ की हिस्ट्री
ज़नाना रौज़ा की हिस्ट्री
रौज़ा नवाब इस्लाम ख़ान की हिस्ट्री
संगतराश मस्जिद की हिस्ट्री
मूसा गुंबद की हिस्ट्री
फतेहपुर सीकरी का आबाद होना
बुलंद दरवाज़ा की हिस्ट्री
जामा मस्जिद की हिस्ट्री
झालरा की हिस्ट्री
मकबरा मखदूम साहिब की हिस्ट्री
मुसन्निफ़ की किताबों का तआरुफ़

मुसन्निफ़

खलीफए अनवारे मिल्लत व नोमाने मिल्लत, शाने आगरा

हज़रत मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान

अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

फेहरिस्त

तारीखे तबाअत

तारीख है येह देखिए तारीखे फतेहपुर
अकबर ने इस जगह का रखा नाम दारून्नूर
तारीख इस में लिखी है शैख सलीम की
आबाद जिनके दम से हुआ है येह फतेहपुर

"तारीख है येह देखिए तारीखे फतेहपुर" इस के अदद **2026** बनते हैं और **2026 ईस्वी** में येह किताब छप कर मंजरे आम पर आई है

"तारीख इस में लिखी है शैख सलीम की" इस के अदद **1447** बनते हैं और **1447 हिजरी** में येह किताब छप कर मंजरे आम पर आई है।

अज़ बिस्मिल फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम मुहम्मद शफीक़ खान,वालिद का नाम मुहम्मद शरीफ खान है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अ़त्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी से 2004 ईसवी में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश 10 जून 1986 ईसवी है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन 2000 ईस्वी में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर 4 साल क़ियाम किया फिर 2004 ईस्वी में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा’वते इस्लामी का दीनी माहौ़ल मिला, दा’वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किये और 2006 ईस्वी में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में क़ारी इक़बाल अह़मद अ़त्तारी से क़ुरआ़ने पाक नाज़िरा और ह़ज़रत मौलाना अ़तीक़ुर्रह़मान मिस्बाही से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता’लीम हासिल करने के लिये चिरैयाकोट जिला मऊ तशरीफ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इ़ल्मी इदारे अल जामिअ़तुल अशरफिया मुबारकपुर आ’ज़मगढ़ में

मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उ़लूम ग़ौसिया (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना, फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज,नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तस्नीफ़ की शुरुआत

2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर,आगरा तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआ़त के दरजए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह़ शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिआ़ में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह़ अश शफीकुन नोअमानी तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह़ शफ़ीकिया तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 50 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

सितंबर 2014 ईस्वी में खलीफए मुफ्तिए आज़म हिन्द हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अन्वारुल हक़ साहिब ने खिलाफत व इजाज़त से नवाज़ा और 25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिए आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी ने सिलसिलए कादरिया, रज़्विया की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक़र्रिर और मुबल्लिग भी हैं । आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक़्तन फ़वक़्तन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है । अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अ़ता करके मौसूफ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

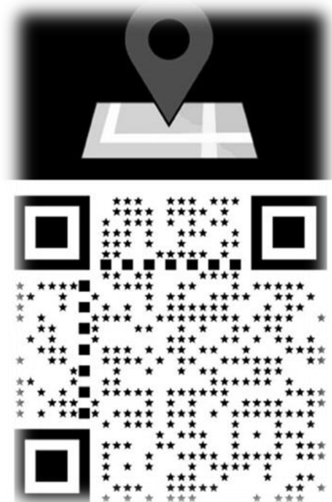
अज़ : अल आजिज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी की किताबों की PDF डाउनलोड करने का QR Code



जमियातुल मदीना फैज़ाने सिद्दीके अकबर आगरा के Location का QR Code

जिस जमियातुल मदीना में हज़रत मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी 2014 ईस्वी से अब (2026 ईस्वी) तक तदरीस फरमाते हैं।



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

وَ عَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

सीरत

हज़रत शैख सलीम चिश्ती

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

पैदाइश :884 हिजरी वफ़ात :979 हिजरी

आप इस बाब में पढ़ सकेंगे

खानदानी हालात	नसब नामा पिदरी
पैदाइश मुबारक	बचपन की करामत
सैरो सयाहत	बैअतो खिलाफत
सफ़रे हरमैन शरीफैन	सलातीन से ताल्लुक
शादी और औलाद	वफ़ात
सीरते मुकद्दस	फरमान व करामत

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सन्ना दिल्ली

सीरत हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती

रहमतुल्लाह अलैहि

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

وَعَلٰی اٰلِکَ وَ اَصْحَابِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने सरचश्मा फ़ैज़ व इरशाद से एक आलम को सैराब फ़रमाया।

ख़ानदानी हालात

आप रहमतुल्लाह अलैहि के आबाओ अज्दाद अजोधन से हिजरत कर के लुधियाना आए कुछ अरसा लुधियाना में रहे, फिर दिल्ली में सुकूनत इख्तियार की, आपके वालिदैन दिल्ली से तर्के सुकूनत कर के फ़तेहपुर सीकरी में रहने लगे।

आप रहमतुल्लाह अलैहि हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाह अलैहि की औलाद में से हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैहि के वालिद का नाम हज़रत बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि है। और आप रहमतुल्लाह अलैहि की वालिदा का नाम बीबी अहद रहमतुल्लाह अलैहा है। हज़रत शैख़ मूसा चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि आप रहमतुल्लाह अलैहि के बड़े भाई हैं।

नसब नामा पिदरी

आप रहमतुल्लाह अलैहि का नसब नामा वालिद की जानिब से इस तरह है:

शैख़ सलीम बिन बहाउद्दीन बिन शैख़ सुल्तान बिन शैख़ आदम बिन शैख़ मूसा बिन शैख़ मौदूद बिन शैख़ बदरुद्दीन बिन शैख़ फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैहिम ।

पैदाइश मुबारक

आप रहमतुल्लाह अलैहि दिल्ली के उस वक़्त के एक मुहल्ला **“सराय अलाउद्दीन ज़िंदा पीर”** में 884 हिजरी में पैदा हुए। आप रहमतुल्लाह अलैहि के पैदाइश के साल में इख्तिलाफ़ है, बाज़ ने आप रहमतुल्लाह अलैहि का पैदाइश साल 897 हिजरी लिखा है।

नाम

आप रहमतुल्लाह अलैहि का नाम शैख़ सलीम है और अरब में आप रहमतुल्लाह अलैहि को शैख़ु हिंद के लक़ब से पुकारा जाता है।

बचपन की करामत

आप रहमतुल्लाह अलैहि ने पैदा होते ही सज्दा किया। आप रहमतुल्लाह अलैहि की पेशानी में धान का एक दाना चुभ गया। उस दाने का निशान पेशानी पर तमाम उम्र रहा। एक बार इस वाक़िआ का ज़िक्र करते हुए आप रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि धान के दाने चुभने से काफ़ी तकलीफ़ होती थी। उस को निकालना चाहा लेकिन इस ख़्याल से नहीं निकाला कि लोगों में इस बात का चर्चा होगा।

बचपन का सदमा

अभी आप रहमतुल्लाह अलैहि कमसिन ही थे कि वालिदैन का साया सर से उठ गया। आप रहमतुल्लाह अलैहि की परवरिश आप रहमतुल्लाह अलैहि के बड़े भाई के साये में हुई, आप रहमतुल्लाह अलैहि के बड़े भाई शैख़ मूसा रहमतुल्लाह अलैहि ने आप रहमतुल्लाह अलैहि की तर्बीयत पर काफ़ी ध्यान दिया।

बुलूग़त की उम्र को पहुंच कर आप रहमतुल्लाह अलैहि ने सफ़र का इरादा किया, अपने बड़े भाई से इजाज़त मांगी, आप रहमतुल्लाह अलैहि के बड़े भाई हज़रत शैख मूसा चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि ने आप रहमतुल्लाह अलैहि को इजाज़त नहीं दी और कहा: कि मेरी कोई औलाद नहीं है, और तुम ही मेरी औलाद हो और मैंने तुम्हें अपनी औलाद की तरह पाला है। येह सुन कर आप रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने बड़े भाई से कहा कि ना उम्मीद ना होना चाहिए, आप रहमतुल्लाह अलैहि के यहां लड़का पैदा होगा, आप रहमतुल्लाह अलैहि का घर रौशन होगा, चुनांचे ऐसा ही हुआ, नौ महीने के बाद शैख़ मूसा रहमतुल्लाह अलैहि के यहां लड़का पैदा हुआ।

तालीम

आप रहमतुल्लाह अलैहि के बड़े भाई के यहां जब लड़का पैदा हुआ तो आप रहमतुल्लाह अलैहि ने रख़्ते सफ़र बाँधा। फ़तेहपुर सीकरी से सरहिंद तशरीफ़ लाए और अल्लामा शैख़ मज्दुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि से उलूमे ज़ाहिरी की तकमील की, जिस ज़माने में आप रहमतुल्लाह अलैहि का क़ियाम सरहिंद में था, आप रहमतुल्लाह अलैहि कभी कभी क़स्बा बदाली जाते और हज़रत शैख़ ज़ैनुल आबिदीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के मज़ार से फुयूज़ व बरकात हासिल करते।

सैरो सयाहत

आप रहमतुल्लाह अलैहि ने 931 हिजरी में हरमैन शरीफ़ की ज़ियारत की, कुछ अरसा मक्का शरीफ में क़ियाम फ़रमाया, फिर मदीनए मुनव्वरा में पहुंच कर दरबारे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में रहने लगे, फिर अरब, अजम, खुरासान, बसरा, शाम की सैरो सयाहत फ़रमाई, फिर उस के बाद अरब वापस आए।

हिन्दुस्तान को वापसी

अरब से आप हिन्दुस्तान वापस आए और फ़तेहपुर सीकरी में गोशा नशीन हो कर इबादात, मुजाहिदात और रियाज़ात में मशग़ूल हुए। ख़ानक़ाह तैयार कराई, बाग़ लगाया और कुवें खुदवाए।

बैअतो ख़िलाफ़त

सैरो सयाहत के दौरान आप रहमतुल्लाह अलैहि बहुत से बुज़ुर्गों और दरवेशों से मिले और उनसे फुयूज़ो बरकात हासिल किए। हज़रत शैख़ इब्राहीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के दस्ते हक़ परस्त पर आप रहमतुल्लाह अलैहि बैअत हुए और उनसे खिरकए ख़िलाफ़त पाया।

सफ़र हरमैन शरीफ़

हैमों बक़्क़ाल की फ़ित्ना परदाज़ी की वजह से आप रहमतुल्लाह अलैहि को दोबारा वतन से बाहर जाना पड़ा, आप रहमतुल्लाह अलैहि 962 हिजरी में बैतुल्लाह पहुंचे और सैरो सयाहत के बाद 976 हिजरी में वापस हुए।

सलातीन से तअल्लुक़ात

इलावा उमरा के सलातीन भी आप रहमतुल्लाह अलैहि के मोअतक़िद थे। ख़वास ख़ां जो उमराए किबार में से था, आप रहमतुल्लाह अलैहि से बहुत अक़ीदत रखता था, कई बादशाह आप रहमतुल्लाह अलैहि के मोअतक़िद थे। शेर शाह, सलीम शाह और अकबर बादशाह आप रहमतुल्लाह अलैहि से इरादतो अक़ीदत रखते थे और बहुत ख़ुलूस, मुहब्बत, इज़्ज़त और ताज़ीम व तकरीम के साथ आप रहमतुल्लाह अलैहि से पेश आते थे।

शादी और औलाद

पहले सफ़र से वापसी के बाद जब फ़तेहपुर सीकरी तशरीफ़ लाए तो आप रहमतुल्लाह अलैहि ने शादी की। आप रहमतुल्लाह अलैहि के तीन लड़के थे :

(1)ताजुद्दीन सबसे छोटे साहबज़ादे थे, इनका इंतिक़ाल ढाई साल की उम्र में हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैहि के दो और लड़के थे।

(2) शैख़ बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि आप रहमतुल्लाह अलैहि के विसाल के बाद आप रहमतुल्लाह अलैहि के सज्जादा नशीन हुए और

(3) क़ुतुबुद्दीन बादशाह जहांगीर के ज़माने में ऊंचे ओहदे पर फ़ाइज़ हुए।

वफ़ात

आप रहमतुल्लाह अलैहि ने 29 रमज़ान 979 हिजरी को विसाल फ़रमाया। **मज़ार फ़ैज़े आसार** फ़तेहपुर सीकरी में मरजए ख़ास व आम है।

खुल्फ़ा

आप रहमतुल्लाह अलैहि के बाद आप रहमतुल्लाह अलैहि के साहिबज़ादे हज़रत शैख़ बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि आप रहमतुल्लाह अलैहि के सज्जादा

नशीन हुए। अरब में जब आप रहमतुल्लाह अलैहि का क़ियाम हुआ तो आप रहमतुल्लाह अलैहि ने सैय्यिद मुहम्मद वली रहमतुल्लाह अलैहि, शैख़ महमूद शामी रहमतुल्लाह अलैहि और शैख़ रजब अली रहमतुल्लाह अलैहि को खिरकए ख़िलाफ़त से मुम्ताज़ फ़रमाया, इनके इलावा आप रहमतुल्लाह अलैहि के मुम्ताज़ खुल्फ़ा येह हैं।

(1)---शैख़ अब्दुल वाहिद रहमतुल्लाह अलैहि

(2)--- शैख़ इमाम सरहिंदी रहमतुल्लाह अलैहि

(3)--- इमाम सैय्यिद हुसैन रहमतुल्लाह अलैहि

(4)--- शैख़ रुकनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि

(5)--- शैख़ याक़ूब रहमतुल्लाह अलैहि

(6)---शैख़ हम्माद रहमतुल्लाह अलैहि

(7)---शैख़ मुहम्मद ग़ौरी रहमतुल्लाह अलैहि

(8)--- शैख़ कबीर रहमतुल्लाह अलैहि

(9)--- शैख़ मुहम्मद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि

(10)--- शैख़ कमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि

(11)--- शैख़ फ़तहुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहि

सीरत मुक़द्दस

शैख सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि साहिबे इल्म व फ़ज़्ल, जामेअ शरीअत व तरीक़त बुज़ुर्ग थे, ज़ोहदो तक़्वे, रियाज़त, मुजाहिदात, तर्क व तजरीद, तहम्मुल, बुर्दबारी में यगानए ज़माना थे, जब तक आप रहमतुल्लाह

अलैहि बहुत कमज़ोर व ज़ईफ़ ना हो गए, आप रहमतुल्लाह अलैहि ने तै के रोज़े नहीं छोड़े, आप रहमतुल्लाह अलैहि को पुराना सिरका और ठंडी तरकारियां बहुत मर्ग़ूब यानी पसंद थीं, ठंडे पानी से रोज़ाना ग़ुस्ल फ़रमाते थे, कैसी ही सर्दी हो आप रहमतुल्लाह अलैहि के लिबास में कोई तब्दीली नहीं होती थी, जाड़े के मौसम में भी बारीक कुर्ता ज़ेबे तन फ़रमाते थे, नमाज़ अव्वल वक़्त पढ़ते थे, लोगों को उन बातों से जो शरीअत के ख़िलाफ़ हैं रोकते थे, जब आप रहमतुल्लाह अलैहि महफ़िल में रौनक अफ़रोज़ होते तो हर शख़्स पर निगाह रखते, किसी को डाँटते, किसी को नसीहत फ़रमाते और किसी को तालीमो तलक़ीन फ़रमाते।

फ़रमान

दरवेशों की हड्डियों में इश्क़े इलाही के सबब बेशुमार सुराख़ होते हैं।

करामत

बादशाह अकबर के कोई लड़का ना था, आप रहमतुल्लाह अलैहि से दुआ का तालिब हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैहि ने मुराक़बा किया और बादशाह अकबर से कहा: अफ़सोस है कि तेरी तक़दीर में बेटा नहीं है। बादशाह अकबर ने येह सुनकर आप रहमतुल्लाह अलैहि से अर्ज़ किया: चूँकि मेरी तक़दीर में बेटा नहीं है, इसी लिए तो आप रहमतुल्लाह अलैहि से अर्ज़ किया है आप रहमतुल्लाह अलैहि दुआ कीजिए। आप रहमतुल्लाह अलैहि बादशाह अकबर के इस जवाब से ख़ुश हुए, थोड़ी देर मुराक़बा किया और फिर फ़रमाया: इस मुल्क में राजपूतों की हुकूमत बहुत अर्से तक रहेगी। अच्छा कल अपनी बेगम यानी बीवी को मेरी बीवी के पास भेज देना।

दूसरे दिन जब बादशाह की बेगम आप रहमतुल्लाह अलैहि के यहां आई तो आप रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी अहलिया मुहतरमा को रानी की पुश्त यानी पीठ से पीठ मिला कर बैठने का हुक्म दिया, जब आप रहमतुल्लाह अलैहि की अहलिया मुहतरमा रानी की पुश्त से पुश्त मिला कर बैठी तो आप रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी चादर दोनों पर डाल दी, फिर अपनी अहलिया मुहतरमा से फ़रमाया कि अपना होने वाला फ़र्ज़ंद यानी बेटा रानी को दे दो। जब बादशाह की बेगम के लड़का पैदा हुआ तो उस लड़के का नाम आप रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने नाम पर **सलीम** रखा, शहज़ादा सलीम आप रहमतुल्लाह अलैहि को **शैख़ू बाबा** कहा करता था, शहज़ादा सलीम अपने वालिद बादशाह अकबर के इंतिक़ाल के बाद तख़्तो ताज का मालिक हुआ और **जहांगीर** के लक़ब से मशहूर हुआ।

एक मर्तबा का वाक़िआ है कि आप रहमतुल्लाह अलैहि हुजरे से नमाज़ के वास्ते मस्जिद जा रहे थे, एक फ़क़ीर को देखा कि सो रहा था आप रहमतुल्लाह अलैहि ने उस को जगाया और उस से फ़रमाया: फ़क़ीरों को किसी से लड़ना नहीं चाहिए। वो फ़क़ीर येह सुनकर शर्मिंदा हुआ और इक़रार किया कि वाक़ेई वो ख्वाब में लड़ रहा था।

आप रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़तेहपुर सीकरी के लोगों से शाही इमारात तामीर होने से 15 साल पहले फ़रमा दिया था कि लोगों को चाहिए कि मकानात कुशादा बना लें, वर्ना फिर जगह नहीं मिलेगी।

नोट: येह सारा मज़मून दर्ज ज़ेल किताबों से लिया गया है :

(1)---अख्बारुल अख्यार (उर्दू तर्जुमा)

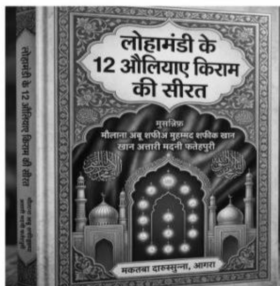
(2)---तारीख़े फ़रिश्ता (जिल्द दोम, फ़ारसी)

(3)---मआरिज़ुल विलायत

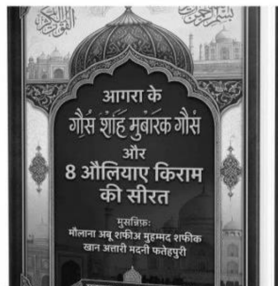
(4)---तज़्किरए औलियाए पाको हिंद, पेज (232.236)

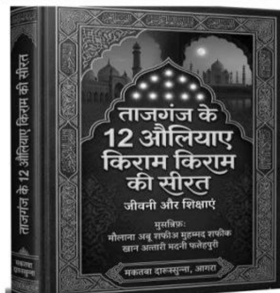
खानकाह हज़रत शैख सलीम चिश्ती

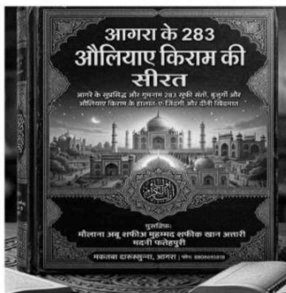


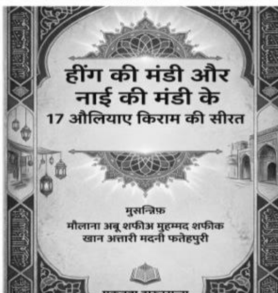












फ़तेहपुर सीकरी को किस ने आबाद किया ?

फ़तेहपुर सीकरी को हिन्दुस्तान के बादशाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह ने आबाद किया था, जिसने ना सिर्फ ख़ानदाने मुग़लिया की बुनियादी सल्तनत को बुलंदी तक पहुंचा दिया बल्कि उसे ऐसा मज़बूत किया कि सदियों तक जुंबिश ना हुई । उस ज़माने में 25 से 30 साल के क़रीब इस नए आबाद शहर को दारुल ख़िलाफ़त होने का फ़ख़र और दरबारे अकबरी का ऐज़ाज़ हासिल रहा । अब अगर्चे तीन, चार सौ बरस से येह वीरान पड़ा है मगर अब भी इस में पिछली अज़्मत की ऐसी यादगारें बाक़ी हैं कि हिन्दुस्तान की किसी गुज़श्ता दारुल हकूमत में इस की मिसाल मिलना मुश्किल है ।

अज़ीमुश्शान इमारात

उत्तरी हिन्दुस्तान में किसी जगह ऐसी नफ़ीस, सही व सालिम और अज़ीमुश्शान इमारात और महल्लात का मजमूआ मौजूद नहीं है जैसा फ़तेहपुर सीकरी में है । और येह बात ख़ास दिलचस्पी से देखने के काबिल है कि ना सिर्फ हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया के दीगर मुल्कों में भी कोई जगह ऐसी नहीं बताई जा सकती कि जहां एक बादशाह के आधे ज़माने की इस क़दर ज़्यादा इमारतें मौजूद हों ।

हैरत में डालने वाली इमारात

यही वजह है कि बड़े बड़े जहाँ दीदा (यानी दुनिया को देखने वाले) सय्याह और वसीउन नज़र मुअर्रिख जब इन इमारतों को देखते हैं तो इस ख़्याल में महवे हैरत रह जाते हैं कि इस क़लील मुद्दत में फ़तेहपुर सीकरी जैसे पहाड़ी मक़ाम पर किस तरह ऐसी नफ़ीस और आलीशान इमारतें तामीर हो

गईं। एक बड़े मुबस्सिर का क़ौल है कि फ़तेहपुर सीकरी को गुज़श्ता ज़माने की संग तराशी का अजाइब ख़ाना और नक़्श व निगार का तिलस्म ख़ाना कहना ज़्यादा मुनासिब है । बाकमाल संग तराशों और आली दिमाग़ नक़्क़ाशों ने मुख़्तलिफ़ इमारात को अजीबो ग़रीब नक़्शो निगार और मुख्तलिफ़ किस्म की ज़ेबाइशों से मुज़य्यन और मुरस्सा किया है।

पत्थर की मज़बूती और नफ़ासत का तो क्या कहना बल्कि जिस गारे या चूने से पत्थरों को वस्ल किया यानी जोड़ा है वो भी फ़ौलाद को शरमाता और हश्त धात को मात करता है। बड़े बड़े इंजीनियर और कैमिस्ट आज तक उस के अज्ज़ा अलैहिदा करने से माज़ूर हैं। और किसी की समझ में नहीं आता कि येह गारा किस तरकीब और किन अज्ज़ा से बनाया गया था।

अफ़सोस कि अब ना वो ज़माना वापस आ सकता है। ना अकबर बादशाह जिसने फ़तेहपुर सीकरी को आबाद कर के ऐसी नफ़ीस इमारतों से आरास्ता व पैरास्ता किया था फिर ज़िंदा हो सकता है। ना यहां पहली सी रौनक हो सकती है।





اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

وَعَلٰی اٰلِکَ وَ اَصْحَابِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

फ़तेहपुर सीकरी

आप इस बाब में पढ़ सकेंगे

*सीकरी की मशहूर शख़्सियत

*अकबर बादशाह का सलीम चिश्ती की बारगाह में आना

*अकबर बादशाह को बेटा मिला

*फ़तेहपुर सीकरी की बुनियाद

*फ़तेहपुर सीकरी दारुस्सल्तनत बन गया

*फ़तेहपुर सीकरी की चहल पहल

*फ़तेहपुर सीकरी के दरवाज़े

तरतीब व तस्हील

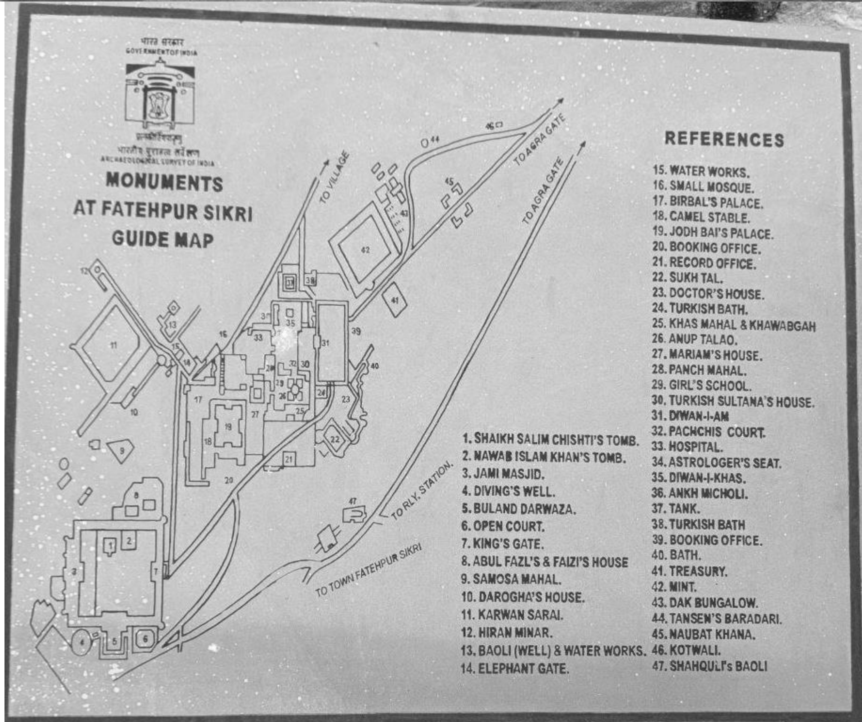
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़

ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली




Fatehpur Sikri ~ Imperial Palace Complex
Daftarkhana
Khwabgah
Anup Talao
Sultanas House
Pachisi Court
Diwan-i-Aam
Miriams House
Panch Mahal
Girls School
Ankh michauli
Diwan-i-Khaas


भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
ARCHAEOLOGICAL SURVEY OF INDIA
MONUMENTS
AT FATEHPUR SIKRI
GUIDE MAP
TO VILLAGE
TO AGRA GATE
TO AGRA GATE
TO RLY. STATION.
TO TOWN FATEHPUR SIKRI
REFERENCES
1. SHAIKH SALIM CHISHTI'S TOMB.
2. NAWAB ISLAM KHAN'S TOMB.
3. JAMI MASJID.
4. DIVING'S WELL.
5. BULAND DARWAZA.
6. OPEN COURT.
7. KING'S GATE.
8. ABUL FAZL'S & FAIZI'S HOUSE
9. SAMOSA MAHAL.
10. DAROGHA'S HOUSE.
11. KARWAN SARAI.
12. HIRAN MINAR.
13. BAOLI (WELL) & WATER WORKS.
14. ELEPHANT GATE.
15. WATER WORKS.
16. SMALL MOSQUE.
17. BIRBAL'S PALACE.
18. CAMEL STABLE.
19. JODH BAI'S PALACE.
20. BOOKING OFFICE.
21. RECORD OFFICE.
22. SUKH TAL.
23. DOCTOR'S HOUSE.
24. TURKISH BATH.
25. KHAS MAHAL & KHAWABGAH
26. ANUP TALAO.
27. MARIAM'S HOUSE.
28. PANCH MAHAL.
29. GIRL'S SCHOOL.
30. TURKISH SULTANA'S HOUSE.
31. DIWAN-I-AM
32. PACHCHIS COURT.
33. HOSPITAL.
34. ASTROLOGER'S SEAT.
35. DIWAN-I-KHAS.
36. ANKH MICHOLI.
37. TANK.
38. TURKISH BATH
39. BOOKING OFFICE.
40. BATH.
41. TREASURY.
42. MINT.
43. DAK BUNGALOW.
44. TANSEN'S BARADARI.
45. NAUBAT KHANA.
46. KOTWALI.
47. SHAHQULI's BAOLI

फ़तेहपुर सीकरी

आबादी तरक़्क़ी तनज़्ज़ुली

फ़तेहपुर सीकरी आगरा से 23 मील के फ़ासिले पर आगरा बयाना रेलवे के रास्ते पर मौजूद है, येह बहुत पुराना क़स्बा नहीं है बल्कि आज से क़रीबन साढ़े तीन सौ बरस (अब साढ़े चार सौ साल) पहले उस की बुनियाद क़ाइम हुई थी।

फ़तेहपुर से पाँच छः फ़र्लांग के फ़ासले पर मौज़ा सीकरी आबाद है जो अब नगर और सीकरी दोनों नामों से मशहूर है। पुराने ज़माने में येह सरकार बयाना (बयाना अब राजिस्थान में आता है) के मुताअल्लिक़ एक मशहूर इस्लामी क़स्बा था जिसमें पाँच सौ घर सिर्फ अंसारियों के थे।

बावजूद इम्तिदादे ज़माना पुरानी आबादी के बहुत से खंडर और क़ब्रें अब तक मौजूद हैं। 84 मस्जिदें, पच्चास, साठ बरस पहले तक मौजूद थीं जिनके निशानात अब तक बतलाए जाते हैं। अब अक्सर मस्जिदों के अंदर आबादी हो गई है।

मौजूदा खन्डरात में दरवाज़ा गढ़ी, राजा बलराम मंदिर, बावली क़दीम, मस्जिद मेवातियाँ, मस्जिद मस्त अली, मस्जिद फ़तेह मुहम्मद, जामा मस्जिद, या बावन खम्मी मस्जिद, क़ाज़ी की हवेली, ज़नानी मस्जिद, मस्जिद अंबिया, मक़बरा मख़दूम साहिब, मूसा गुंबद, शायक़ीन आसारे क़दीमा की दिलचस्पी का बाइस हैं।

सीकरी की मशहूर शख़्सियत

इसी क़स्बा सीकरी में एक बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि रहते थे जो शैख़ फ़ारूक़ी रहमतुल्लाह अलैहि और हज़रत बाबा

शैख़ फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाह अलैहि की औलाद में थे। आप रहमतुल्लाह अलैहि की पैदाइश तो दिल्ली की थी लेकिन 9 बरस की उम्र थी कि अपने वालिदैन के साथ सीकरी में तशरीफ़ ले आए थे और इब्तिदाए हाल में सीकरी की पहाड़ी के ऊपर जहां अब **मस्जिद संगतराश** मौजूद है एक बड़े ग़ार में बैठ कर जो अब भी उस मस्जिद के हुजरे में मौजूद है इबादत व रियाज़त फ़रमाया करते थे।

पहला हज का सफ़र

18 बरस की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैहि हज के वास्ते तशरीफ़ ले गए। और 30 बरस तक अरब, ईरान, रुम, शाम, बग़दाद शरीफ़, नजफ़ अशरफ़, करबलाए मुअल्ला, बसरा, लहसा, मिस्र और पच्छिमी इस्लामी मुमालिक में सैर व सयाहत और 24 या 14 हज अदा फ़रमा कर 944 हिजरी बमुताबिक़ 1537 ईस्वी में सीकरी में वापस तशरीफ़ लाए और उसी ग़ार के क़रीब आप रहमतुल्लाह अलैहि ने सुकूनत इख्तियार फ़रमाई और चंद खल़ीफ़ा और मोअतक़िदीन के मकानात भी क़ुर्बो जवार में तामीर हुए।

दूसरा हज का सफ़र

962 हिजरी बमुताबिक़ 1554 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैहि दोबारा हज के वास्ते तशरीफ़ ले गए और 971 हिजरी बमुताबिक़ 1563 ईस्वी में वापस आए। उस वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैहि ने एक ख़ानक़ाह की बुनियाद डाली और मस्जिद संगतराश भी ग़ालिबन उसी वक़्त तामीर की गई।

अकबर बादशाह का सलीम चिश्ती की बारगाह में आना

येह अकबर बादशाह का इब्तिदाई ज़माना था। बादशाह की 17 या 28 बरस की उम्र हो गई थी। इस अरसा में कई बच्चे हुए और मर गए।

बादशाह को औलाद की बड़ी आरज़ू थी और इस तमन्ना में अक्सर साहिबे कमाल फकीरों की ख़िदमत में भी दुआ की इल्तिमास दुआकरने के वास्ते हाज़िर हुआ करता था। एक दिन शैख़ मुहम्मद बुख़ारी और हकीम ऐनुल मलिक ने बादशाह के रूबरू हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के बहुत से औसाफ़ और कमालात बयान किए। बादशाह को मुलाक़ात का इश्तियाक़ यानी शौक़ पैदा हुआ और ख़ुद हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि की ख़िदमत में हाज़िर हो कर दुआ की इल्तिजा की। इस मुलाक़ात का हाल जहांगीर बादशाह ने अपनी किताब **'तोज़क जहांगीरी'** में इस तरह लिखा है :

जिन दिनों वालिद बुज़ुर्गवार को फ़र्ज़ंद की बड़ी आरज़ू थी, एक पहाड़ में सीकरी इलाक़ा आगरा के पास शैख़ सलीम रहमतुल्लाह अलैहि **नाम एक साहिबे हालत फ़क़ीर थे कि उम्र की बहुत मंज़िलें तै की हुई थीं, उधर के लोगों को उन से बड़ी अक़ीदत थी, मेरे वालिद जो कि फ़क़ीरों के नियाज़मंद थे उन के पास गए। एक दिन तवज्जो के दौरान और बेख़ुदी के आलम में उनसे पूछा कि हज़रत क्या मेरे फ़र्ज़ंद होंगे ? फ़रमाया: कि ख़ुदा तुम्हें तीन फ़र्ज़ंद देगा। वालिद ने कहा: कि मैं मन्नत मानता हूँ कि पहले फ़र्ज़ंद को आप** रहमतुल्लाह अलैहि **के दामने तर्बियत और तवज्जो में डालूँगा और आप** रहमतुल्लाह अलैहि **की मेहरबानी को उस का हामी और हाफ़िज़ करूँगा। शैख़** रहमतुल्लाह अलैहि **की ज़बान से निकला कि मुबारक हो। मैं भी उसे अपना हम नाम बनाऊँगा।**

अकबर बादशाह को बेटा मिला

इस मुलाक़ात के थोड़े ही दिन बाद बादशाह को मालूम हुआ कि एक बेगम को हमल है। येह सुनकर बादशाह अकबर को बहुत ख़ुशी हासिल हुई और बेगम को ख़ुद हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के मकान पर पहुंचा दिया और चंद रोज़ हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि की मुलाज़िमत में रहा और रंग महल की इमारत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि की हवेली और ख़ानक़ाह के पास बनवानी शुरू की। और हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के वास्ते एक नई आलीशान ख़ानक़ाह और मस्जिद की तामीर का हुक्म दिया।

जहांगीर की पैदाइश

17 रबीउल अव्वल 977 हिजरी बमुताबिक़ 1569 ईस्वी को शहज़ादा सलीम यानी जहांगीर बादशाह और 13 मुहर्रम 978 हिजरी बमुताबिक़ 1570 ईस्वी को शहज़ादा मुराद इसी मकान (यानी रंग महल) में पैदा हुआ। दोनों मर्तबा बड़ी बड़ी ख़ुशी के सामान हुए और मुल्क के तमाम क़ैदी आज़ाद हो गए। जब शहज़ादा सलीम की उम्र दो बरस की हो गई तो 17 रबीउल अव्वल 979 हिजरी बमुताबिक़ 1571 ईस्वी को अकबर बादशाह हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के मकान पर आया। दोनों शहज़ादों को देखा ख़ुशी से बाग़ बाग़ हो गया। उसी दिन हुक्म दिया कि दीवाने दौलत और शबिस्ताने हशमत के लिए क़सरहाए आली (यानी बुलंदो बाला महल्लात तामीर हों। तमाम अदना व आला उमरा पुख़्ता और मज़बूत और गचकारी (यानी पच्चे कारी) की इमारतों से महल और मकानात आरास्ता करें। पुख़्ता और मज़बूत और चौपड़ के बाज़ार, मदरसे,

ख़ानक़ाहें, हम्माम और बाग़ात तामीर किए जाएं। शोरफा, ग़ुरबा हर पेशा के लोग आबाद हो कर दिलचस्प मकानों और दिलकश दुकानों से शहर की आबादी बढ़ाईं।

फ़तेहपुर सीकरी की बुनियाद

शहर के गिर्द पत्थर और चूने की फ़सील (यानी दीवार) का दायरा खींचा जाये। ग़र्ज़ कि उसी तारीख़ को फ़तेहपुर सीकरी की बुनियाद क़ाइम हुई। और बहुत थोड़ी मुद्दत में ऐसा तिलस्माती शहर आबाद हो गया जिसके मौजूदा खन्डरात और आसारात को देखकर आज भी सय्याहाने आलम तअज्जुब करते हैं। चूँकि बादशाह बाबर ने इसी सीकरी के क़रीब मौज़ा **ख़ानवह** के मैदान में राना सांगा पर फ़तह पाई थी लिहाज़ा बादशाह ने मुबारक शुगून समझ कर **फ़तह आबाद** नाम रखा फिर **फ़तेहपुर** मशहूर हो गया और बादशाह ने भी इसी नाम को पसंद फ़रमा लिया। और शाही काग़ज़ात में दारुल ख़िलाफ़त, दारुस्सुरूर, दारुन्नूर, दारुस्सल्तनत, दारुल इकबाल के ख़िताब के साथ लिखा जाने लगा। जहांगीर ने लिखा है कि:

वालिद बुज़ुर्गवार (यानी अकबर बादशाह) ने मौज़ा सीकरी को जो मेरी पैदाइश की जगह है मुबारक समझ कर अपना पाए सख़्त मुक़र्रर किया और 14,15 बरस की मुद्दत में तमाम पहाड़ और जंगल में जिसमें सिवाए दरिंदों के किसी का गुज़र भी ना होता था आलीशान और नफ़ीस इमारतें , सरसब्ज़ बाग़ात और सैर गाहें तामीर हो कर एक बड़ा शहर आबाद हो गया, जो गुजरात की फ़तह के बाद फ़तेहपुर के नाम से मौसूम हुआ।

इस मज़मून को मुंशी वलीयुद्दीन साहिब चिश्ती फ़तेहपुरी ने किया ख़ूब नज़्म का लिबास पहनाया है :

पहले था येह एक दश्त वीराँ
रहते थे मुदाम दामो दू याँ
पर सीकरी गांव में कुछ इंसां
आबाद थे बादल परेशां

अल क़िस्सा येह एक मकाने हू था
वीराना व दश्त चार सू था

उस कोह का नागहां मुक़द्दर
चमका जो मिसाल माहे अनवर
एक बुरज शरफ़ का माह इस पर
तालए हुआ मिस्ले शाह ख़ावर

जब गर्दिशो इन्क़िलाब निकला
इस कोह पे आफ़ताब निकला

यानी क़दम सलीम आया
इस कोह पे भी कलीम आया
ख़िज़र रहे मुस्तक़ीम आया
फ़य्याज़ो सख़ी नईम आया

मस्जिद का जो शौक़ दिल में आया
काअबा सरे कोह बनाया

बढ़ने लगी फिर तो ज़ेबो ज़ीनत
क़ाइम हुई हर तरफ़ इमारत
लुटने लगी सल्तनत की दौलत
बजने लगी तहनियत की नौबत

हज़रत की दुआ ने पाई तासीर
पैदा हुआ ख़ल्क़ में जहांगीर

फ़तेहपुर सीकरी दारुल सल्तनत बन गया

अल्लामी अबुल फ़ज़्ल आईने अकबरी में लिखते हैं: सरकार बयाना का एक गांव सीकरी दारुल ख़िलाफ़त आगरा से 12 कोस के फ़ासिले पर मौजूद है इस की ख़ुश क़िस्मती ने जब ज़ोर किया तो जहांपनाह (अकबर) ने इस को तमाम शहरों का सरताज बना दिया। यहां एक पुख़्ता और मज़बूत क़िला तामीर कर के उस के एक दरवाज़े (हतिया पोल) पर पत्थर के हाथी नसब कराए। येह आलीशान महल्लात से मुज़य्यन है। पहाड़ी की चोटियों पर क़सरे शाही और उमराए सल्तनत की आलीशान हवेलियाँ हैं। नीचे मैदानों में कोसों तक बेशुमार पुरफ़िज़ा बाग़ात और मौसिमे गर्मा में हवा खाने के वास्ते बारह दरियां बनी हैं। जहांपनाह (यानी अकबर बादशाह) ने एक मस्जिद, मदरसा, ख़ानक़ाह और एक मक़बरा दरगाह हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती फ़र्मा इन्ही पहाड़ियों पर तामीर कराया है। यहां की इमारात की ख़ूबसूरती और दिल रुबाई और सनअत को देख देख कर दूरो नज़्दीक के सय्याहान (यानी घूमने वाले लोग) महवे हैरत होते हैं। रुए ज़मीन की कोई इमारत क़सरहाए शाही की शानो शौकत को नहीं पहुँचती। शहर के पास ही शाही चौगान और शिकार खेलने का मैदान है। इसी में एक मीनार (हरम मीनार या हिरन मीनार) बना है जिस पर बैठ कर बादशाह अकबर हाथियों की लड़ाई देखा करता है। ख़ुदा ने अपने फ़ज़्लो करम से पत्थर की कान भी यहीं पैदा कर दी है जो रूप बाँस (फ़तेहपुर से 5 किलोमीटर दूर एक गांव) में लाल पत्थर की कान है। जिसमें से जितना चाहो पत्थर ले लो। यहां की इमारात के तमाम सुतून यानी पिलर और पटियाँ यहीं के पत्थर की हैं जिन्हें

गोया ख़ुदावंदे क़दीर ने जहांपनाह (अकबर बादशाह) ही के वास्ते अमानत रखा था। उम्दा रेशमी कपड़ों के कारख़ाने बादशाह अकबर के इशारे से यहां जारी हैं और हर किस्म के अहले फ़न व हुनर और बाकमाल सन्नाअ इस जगह अकबर बादशाह की सरपरस्ती में जमा हैं। एक आलीशान पुख़्ता और मज़बूत बाज़ार भी तामीर कराया है। ग़र्ज़कि इस शहर की ख़ूबसूरती और ख़ुश नुमाई को देख कर तमाम दुनिया के बड़े बड़े शहर इस पर रश्क करते हैं। जहांपनाह (अकबर बादशाह) ने ख़ुद इस का नाम **फ़तह आबाद** रखा था। मगर रईयत ने इस नाम को पसंद नहीं किया और दरख़ास्त की कि हम अपने शहर का नाम **फ़तेहपुर** रखना चाहते हैं। रईयत के दिलदादा बादशाह ने उन की दरख़ास्त को बखुशी मंज़ूर किया। चुनांचे अब येह **फ़तेहपुर** के नाम से मौसूम है।

फ़तेहपुर सीकरी की चहल पहल

फ़तेहपुर सीकरी की अकबरी ज़माने की आबादी और रौनक का अंदाज़ा यूरोपियन सय्याह व सौदागर की तहरीर से बख़ूबी होता है वो लिखता है कि: आगरा से हम फ़तेहपुर सीकरी में पहुंचे जहां बादशाह दरबार करता है येह आगरा से बड़ा है मगर गलियाँ और मकानात ऐसे ख़ूबसूरत और साफ़ नहीं हैं। यहां भी कसरत से मुसलमान रहते हैं। लोग कहते हैं कि यहां पर बादशाह ने एक हज़ार हाथी, बीस हज़ार घोड़े और बारह सौ हिरन पाले हैं और मुर्गों, बाज़ों और दूसरी शिकारी चिड़ियों की तादाद तो इस क़दर ज़्यादा है कि देख कर तअज्जुब होता है। हरम सरा में आठ सौ बेगमात हैं बादशाह का दरबार बड़ा रफ़ीउश्शान है इस को दार ख़ाना कहते हैं। आगरा और फ़तेहपुर दोनों शहर लंदन से बहुत बड़े हैं। इन दोनों शहरों के दर्मियान में 12 मील का फ़ासिला है मगर येह तमाम दर्मियानी रास्ता माकूलात यानी

खाने की चीजों और दूसरी किस्म के सामानों के बाज़ारों से ऐसा आबाद है कि शहर ही का सिल्सिला मालूम होता है। आदमियों की आमदो रफ़त यानी आना जाना भी इस कसरत से है कि गोया बाज़ार है।

इस शहर में फ़ारस, तिब्बत और सारे हिन्दुस्तान और दीगर मुल्कों के सौदागर हज़ारों की तादाद में जमा होते हैं और रेशम, कपड़े, क़ीमती जवाहिरात की ख़ूब ख़रीदो फ़रोख्त होती है।

फ़तेहपुर सीकरी की तनज़्ज़ुली

अकबर बादशाह के बाद अगर्चे फ़तेहपुर सीकरी की आबादी को तनज़्ज़ुल होना शुरू हुआ यानी घटने लगी, लेकिन जहांगीर के ज़माने में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के पोते, पर पोते और नवासे ऐसे आला मदारिज पर पहुंचे कि इन की इमारत व रियासत की वजह से कमो बेश यहां की रौनक क़ाइम रही। जहांगीर, शाहजहाँ और आलमगीर अक्सर फ़तेहपुर आते जाते थे। मुहम्मद शाह के ज़माने तक तमाम शाही इमारात की हिफ़ाज़त और मरम्मत होती रही। जब मुग़्लिया सल्तनत में कमज़ोरी पैदा हुइ और जाटों और मराहठों की लूट खसूट शुरू हुई, मुहल्ले के मुहल्ले कूचे के कूचे वीरान हो गए और सैकड़ों हज़ारों नफ़ीस व बेनज़ीर इमारतें बेदर्द हाथों से हमेशा के लिए नीस्तो नाबूद हो गईं।

काफी साल बाद लार्ड कर्ज़न गवर्नर जनरल हिंद ने आसारे क़दीमा के तहफ़्फ़ुज़ का क़ानून बना कर फ़तेहपुर सीकरी की बाक़ी मांदा दिल फ़रेब और नादिरुल वुजूद इमारात की मरम्मत करा दी और तारीख़ी वाक़िआत के साथ तमाम इमारात के नक़्शे और बाक़ी मांदे नक़्शो निगार और कारीगरों के अजीबो ग़रीब नमूनों को सफ़्हा क़िर्तास पर जल्वा अफ़रोज़ करा के बकाए दवाम के मर्तबा पर पहुंचा दिया।

फ़तेहपुर सीकरी के दरवाज़े

फ़तेहपुर सीकरी की मौजूदा आबादी 1901 ईस्वी की मर्दुम शुमारी के ऐतिबार से सिर्फ 7147 है। इस आबादी का कुछ हिस्सा पहाड़ पर और कुछ हिस्सा पहाड़ के नीचे जुनूबी यानी दक्खिन की जानिब आबाद है। तीन तरफ़ एक पुख़्ता कंगूरादार फ़सील (यानी चहार दीवारी) है। जिसका गोला 6 मील का बयान किया जाता है। फ़सील के हर मोड़ पर बुर्ज हैं और हस्बे ज़ैल आठ पुख़्ता और मज़बूत दरवाज़े बने हैं।

(1)--- दिल्ली दरवाज़ा
(2)--- आगरा दरवाज़ा
(3)--- लाल दरवाज़ा
(4)---बीर पोल दरवाज़ा
(5)---चन्द्र पोल दरवाज़ा
(6)---ग्वालियर दरवाज़ा
(7)---तेरह दरवाज़ा
(8)---अजमेरी दरवाज़ा

इनके इलावा तेरह और अजमेरी दरवाज़ों के दर्मियान में एक मामूली दरवाज़ा पहाड़ी पर और है जो **चोर खिड़की** के नाम से मौसूम है। अकबरी ज़माने में फ़सील के अंदर और क़ुर्बो जवार में ज़मीन की इस क़दर क़िल्लत और आबादी की कसरत थी कि अमीर लोगो को भी जगह ना मिलती थी। अब येह हाल है कि आगरा दरवाज़े में घुसते ही खन्डर नज़र आना शुरू होते हैं। जिधर नज़र उठा कर देखिए पत्थर और चूने के अंबार और गिरी हुई इमारात के आसार नज़र आते हैं। सिर्फ **नक़्क़ार ख़ाना** और **दरगाह शरीफ़** की दर्मियानी इमारतें किसी क़दर अच्छी हालत में हैं जिनकी बुलंद चोटियों और मीनारों पर :

सुब्ह को ताइराने ख़ुश इल्हान
पढ़ते हैं कुल्लु मन अलैहा फॉन

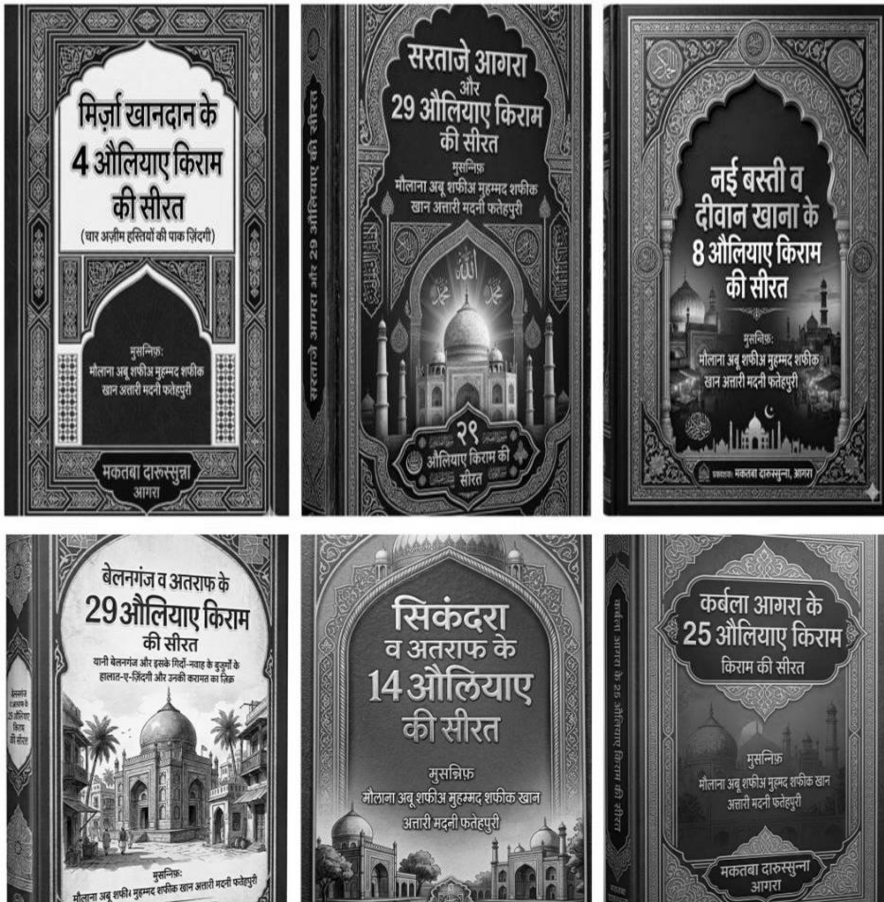
एक फ़्रांसीसी मुअर्रिख़ का बयान

मशहूर फ़्रांसीसी मुहक़्क़िक़ डाक्टर गस्ताओली बान अपनी शोहरा आफ़ाक़ किताब **"तमद्दुने अरब"** में लिखता है कि अकबर ने 1560 ईस्वी से दस साल तक फ़तेहपुर का क़सर यानी महल बनाया जिसका बक़ीया हिस्सा इस वक़्त भी हमें उन सोते हुए शहरों को याद दिलाता है जिनकी तस्वीर अलिफ़ लैला में खींची गई है। चंद रोज़ बाद ही आबो हवा से तंग आकर बादशाह अकबर ने इस नए पाया तख़्त को तमाम मकानात और हवेलीयों और मसाजिद और आबादी के साथ छोड़ दिया। उस वक़्त से येह पुर तकल्लुफ़ शहर जिसे यूरोप की बड़ी रियासतें भी अपना दारुस्सल्तनत बनाने का फ़ख़र करें सिर्फ शेरों का मस्कन व मावा हो गया और इन्सान की जिन्स से इस में सिर्फ चंद फ़क़ीर रह गए।

मुंशी वलीउद्दीन साहिब चिश्ती ने ख़ूब लिखा है:

गुलज़ार था फ़तेहपुर एक दिन
बेख़ार था फ़तेहपुर एक दिन
दरबार था फ़तेहपुर एक दिन
दुरबार था फ़तेहपुर एक दिन
बाक़ी है मकाँ मगर मकीं नहीं है
ख़ातम है मगर नगीं नहीं है
था मादने ज़र कभी येह मस्कन
था गंजे गुहर कभी येह मस्कन
था जाये ज़फ़र कभी येह मस्कन
था रूहे बशर कभी येह मस्कन
दिल सोज़ था हर दरिया उस का

मद्दाह था शहर यार उस का
फ़िर्दौस का बाग़ था कभी येह
गुज़ार का दाग़ था कभी येह
हर ग़म से फ़राग़ था कभी येह
दिल्ली का चिराग़ था कभी येह
अब तो फ़क़त एक खन्डर पड़ा है
इस घर को फ़लक भी रो रहा है



اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

وَعَلٰی اٰلِکَ وَ اَصْحَابِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

दरगाह शरीफ़

*दरगाह शरीफ़
*ज़नाना रौज़ा
*रौज़ा सलीम चिश्ती
*झालरा
*रंग महल
*बुलंद दरवाज़ा
*जामा मस्जिद
*रौज़ा नवाब इस्लाम ख़ान चिश्ती
*मस्जिद संग तराश

मुसन्निफ़
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा



दरगाह शरीफ़ और इमारात

दरगाह शरीफ़

फ़तेहपुर की तमाम इमारतों की जान और सरताज **"दरगाह हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती"** रहमतुल्लाह अलैह की इमारत है जो सनअतो रिफ़अत, इज़्ज़तो अज़मत हर लिहाज़ से मुम्ताज़ और अकबर बादशाह के ज़माने की तमाम इमारात पर खास फ़ौक़ियत रखती है दरगाह क्या है ? एक छोटा सा क़िला है, अकबर ने अस्ल में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के वास्ते येह आलीशान ख़ानक़ाह तामीर कराई थी जो पाँच लाख रुपया के ख़र्च से पाँच साल के अर्से में बन कर तैयार हुई थी। शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के रौज़ा के इलावा तमाम इमारत नफ़ीस लाल पत्थर की है। पच्छिमी गोशे में आलीशान जामा मस्जिद और बक़ीया गोशों में हुजरे और उनके आगे बरामदे हैं। कुल इमारत में 87 हुजरे, छोटे बड़े 81 दर, दो बड़े और दो छोटे दरवाज़े और दालानों और मस्जिद की छत पर अंदरूनी जानिब 127 बुर्जियां बनी हैं जिन्होंने इमारत की ख़ुश नुमाई को दो बाला कर दिया है। इनके इलावा 12 बुर्जियां बुलंद दरवाज़ा पर और 26 बुर्जियां नवाब इस्लाम ख़ान के रौज़ा पर भी हैं। पुख़्ता और मज़बूत चहार दीवारी पर जिसकी बुलंदी 68 फ़ुट है निहायत ख़ूबसूरत कंगूरे कटे हुए हैं। पूरब की जानिब की दीवार के दोनों गोशों पर आठ पहल बुर्ज हैं। दर्मियानी सेहन पूरब, पच्छिम 430 फ़ुट और उत्तर, दक्खिन 366 फ़ुट हैं कुल सेहन में लाल पत्थर का फ़र्श है। उत्तरी जानिब हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का रौज़ा, नवाब इस्लाम ख़ान का मक़बरा और ज़नाना रौज़ा है। दक्खिनी

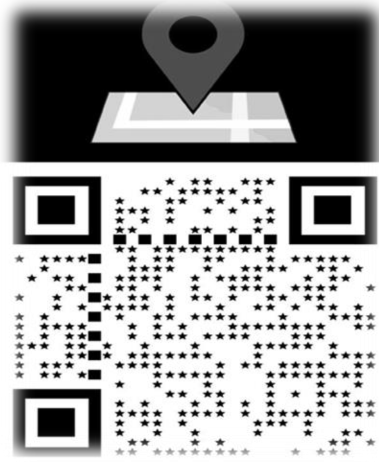
जानिब का आलीशान और सदर दरवाज़ा **"बुलंद दरवाज़ा"** और पूर्वी जानिब का दरवाज़ा **"शाही दरवाज़ा"** के नाम से मौसूम है।

दरगाह के सेहन में बहुत सी क़ब्रें और एक बर्खा (कुँआं) बना हुआ है जिसमें रौज़ा की छत का सालाती पानी जमा रहता और पीने के काम में आता है। दरगाह शरीफ़ या मस्जिद की पच्छिमी दीवार की पुश्त पर एक वसीअ इहाता है जिसमें औरतों और बच्चों की क़ब्रें हैं इसी में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के एक ख़ुर्दसाल यानी छोटे बच्चे **शैख़ ताजुद्दीन** का मज़ार भी है जो **"बाले मियां"** के मज़ार के नाम से मौसूम है।

खिड़की दरवाज़े के क़रीब ही एक पुख़्ता और मज़बूत तीन दर की इमारत शैख़ इब्राहीम मासूम इब्ने शैख़ ज़ैनुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह की तामीर की हुई मौजूद है।



हज़रत शैख सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ मज़ार तक पहुँच सकते हैं ।



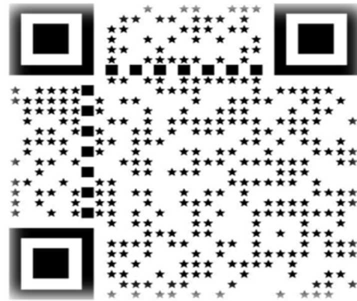
बुलंद दरवाज़ा

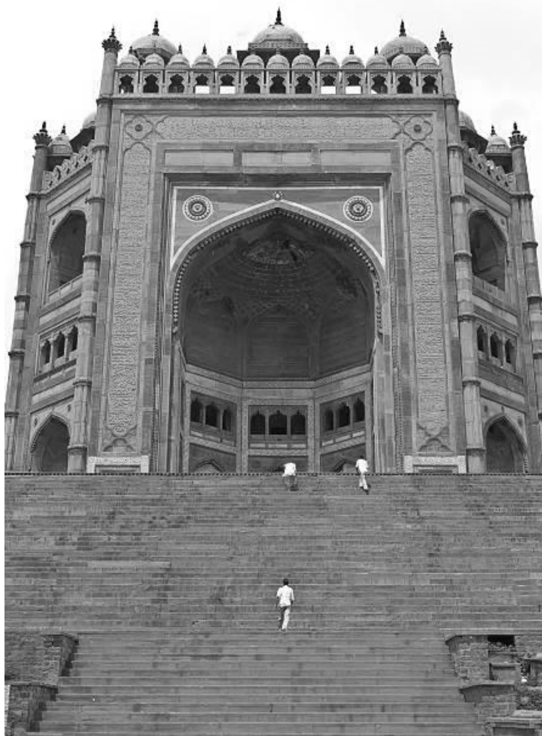
इस रफ़ीउश्शान पुख़्ता और मज़बूत दरवाज़े की ख़ुशनुमाई और बेहतरीन मंज़र का बयान, बयान से बाहर है। पहाड़ी की सबसे बुलंद चोटी पर इस की पाँच मंज़िला इमारत मौजूद है, हर मंज़िल में ख़ुशनुमा दालान और बुर्ज व बुर्जियां बनी हुई हैं, येह दरवाज़ा 129 फ़ुट बुलंद और मीलों दूर से नज़र आता है। पेश और ताक़चों की ख़ुशनुमाई नफ़ीस संग मरमर और संगे मूसा की पच्चे कारी और बे नज़ीर मम्बत कारी देखने से तअल्लुक़ रखती है, इस का बेनज़ीर कत्बा हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के एक ख़लीफ़ा शैख़ हुसैन इब्ने अहमद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के पुर ज़ोर क़लम की बेहतरीन यादगार हैं, येह आलीशान दरवाज़ा 983 हिजरी ब मुताबिक़ 1575 ईस्वी का तामीर किया हुआ है।

अंदरूनी जानिब दर्मियानी दर के बाज़ुओं पर नस्तालीक़ व ख़ुशख़त हुरूफ़ में जो कत्बा कुंदा है वो अकबर के ज़माना के एक मशहूर किताबत

नवीस अमीर मीर मासूम की यादगार और 1010 हिजरी में कुंदा (यानी लिखा गया) है। पच्छिमी बाज़ू के कत्बा के ऊपर एक काबिले दीद यानी देखने के क़ाबिल तुग़रा कुंदा है जिसे शाहजहाँ के ज़माना और 1042 हिजरी में अहमद अली अरशद नामी तुगरा बनाने वाले ने कुंदा किया था।

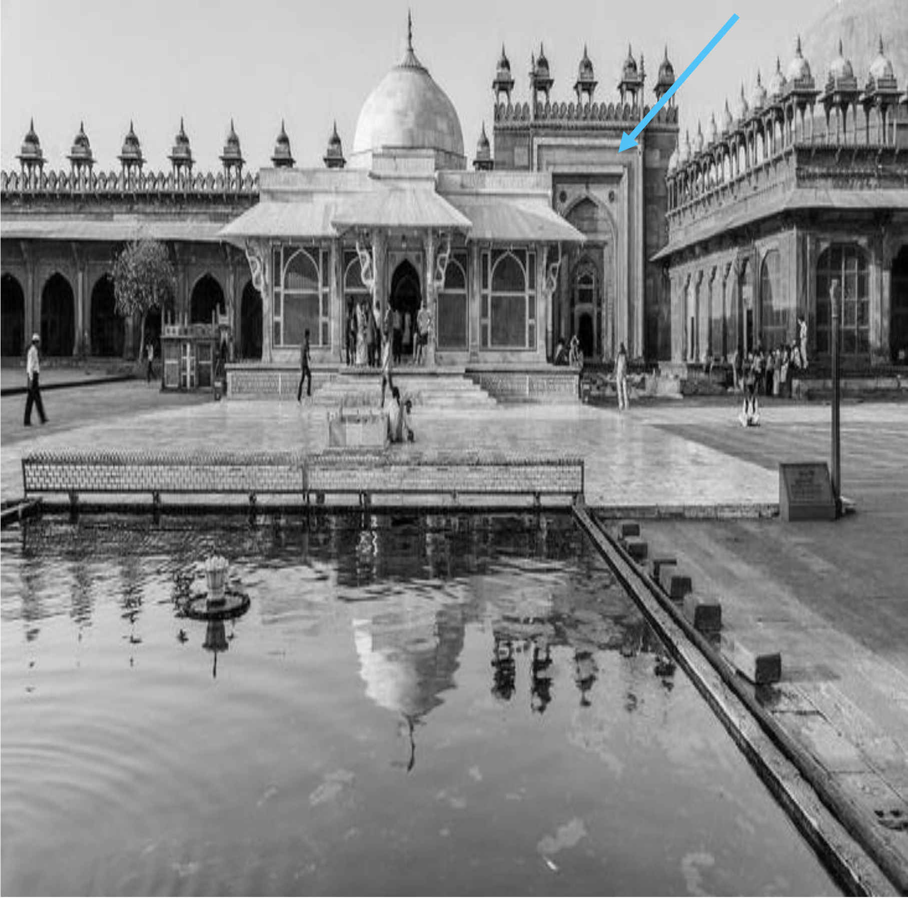
बुलंद दरवाज़ा के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।



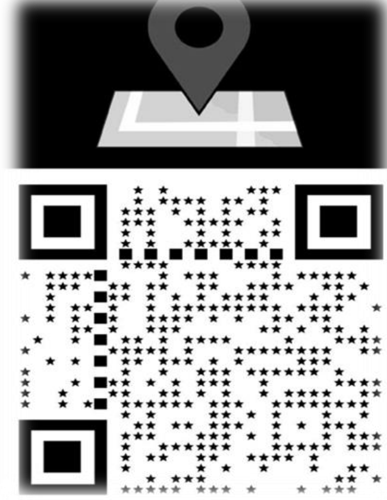


ज़नाना रौज़ा

दरगाह शरीफ़ के अंदर उत्तरी जानिब बुलंद दरवाज़ा के जो ख़ुशनुमा दरवाज़ा नज़र आता है येह **ज़नाना (औरतों के) क़ब्रिस्तान** का दरवाज़ा है जिसमें हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान की मस्तूरात यानी औरतों की क़ब्रें हैं, इस दरवाज़ा की पेशानी और अतराफ़ में संग मरमर और फ़ीरोज़ी रंग की चीनी का बहुत अच्छा काम है। बालाई हिस्से पर ख़ुशनुमा गुलदस्ते और गमज़ियां मुज़य्यन हैं।



ज़नाना रौज़ा के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



जामा मस्जिद

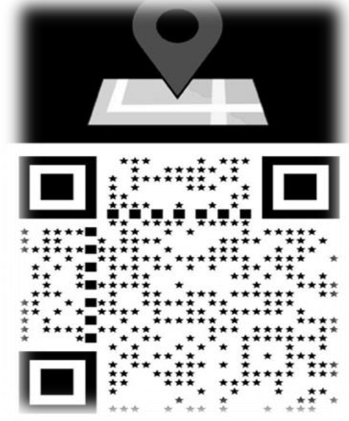
दरगाह शरीफ़ के पच्छिमी कोने में येह वसीअ व रफीउश्शान मस्जिद मौजूद है जो **जामा मस्जिद** के नाम से मौसूम और दुनिया की आला व अफ़ज़ल मसाजिद में शुमार की जाती है। इस की लंबाई 291 फ़ुट और चौड़ाई 78 फ़ुट या 63 फ़ुट है, येह अंदर सात दर्जों में मुन्क़सिम है, दर्मियानी दर्जे के आगे पेश ताक़ और अतराफ़ में तीन तीन दर्जों के आगे 9,9 मेहराब दार दरों के 2 दर्जे हैं इस तफ़सील से कुल मस्जिद में 10 दर्जे हैं जिनमें 136 बुलंद और मुनक़्क़श सुतून यानी पिलर नसब यानी लगे हुए हैं, पच्छिमी दीवार में बहुत ख़ुशनुमा मेहराबें बनी हैं, आयाते करआनी के मुताबर्रिक कत्बों और संग मरमर, संगे मूसा और चीनी की पच्चे कारी ने मस्जिद की ख़ुशनुमाई को दो बाला कर दिया है।

मस्जिद का दर्मियानी दर्जा सबसे बड़ा और सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत है जिस का फ़र्श और पेश ताक़ संग मरमर का है, येह संग मरमर का काम मस्जिद की तामीर के 35 साल बाद नवाब क़ुतुबुद्दीन ने जो हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के नवासे और जहांगीर के ज़माने के मशहूर अमीरों में थे बनवाया था, **''जन्नते सानी''** के अदद 1014 हिजरी इस की तामीर की तारीख़ है। बा कमाल कारीगरों ने दर्मियानी दर्जे को ख़ुशनुमा बनाने में कोई कसर उठा नहीं रखी। ख़ुशनुमा पच्चे कारी, आला मन्बत कारी और मुख्तलिफ़ किस्म की गुल कारी से नमूनए बहिश्त बरीं बना दिया था। मस्जिद का पेश ताक़ निहायत शानदार और फ़र्श से 78 फ़ुट 9 इंच बुलंद है इस में निहायत ही ख़ुश ख़त नस्तालीक़ हुरूफ़ में एक कत्बा लिखा हुआ है। इस मस्जिद की तामीर का साल 979 हिजरी है।

छत पर निहायत आलीशान तीन गुंबद और मुतअद्दद गुलदस्ते और मीनार बने हैं येह गुंबद गचकारी के हैं मगर निहायत शानदार और आला सनअत का नमूना हैं।



जामा मस्जिद के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



रौज़ा हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती

दरगाह शरीफ़ की अंदरूनी इमारात में सबसे ज़्यादा ख़ुशनुमा इमारत हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के रौज़ा की है जिसे 988 हिजरी ब मुताबिक़ 1580 ईस्वी में नवाब क़ुतुबुद्दीन ख़ान ने तामीर कराया था। अजीब, नफ़ीस व नूरानी इमारत है जिसे अगर नमूनए फ़िरदौसे बरीं कहें तो बजा है या बुक़्क़ए नूर समझें तो रवा है, चाबुक दस्त कारीगरों ने अपना ख़ूब कमाल दिखाया है कि रौज़ए रिज़वाँ का नमूना फर्शे ज़मीन पर बनाया है। येह निहायत दिलकश और ऐसा दिलचस्प मक़ाम है जिसके नज़्ज़ारे से आँखों में नूर और दिल में सुरुर पैदा हो कर सानेअ हक़ीक़ी यानी अल्लाह पाक की सनअते कामिला का जल्वा पेशे नज़र हो जाता है, ख़ुसूसन शबे माह में तो इस पर ऐसा नूर बरसता है जिसका बयान अल्फ़ाज़ के ज़रिये से ना मुम्किन है।

येह इमारत ख़ालिस और शफ़्फ़ाफ़ संग मरमर की है मज़ार मुबारक का ख़ास हुजरा मुरब्बा शक्ल का यानी चौकोर है जिसका हर गोशा 16 फ़ुट

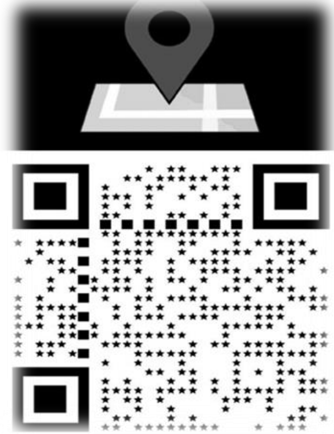
4 इंच है, इस के 3 दरवाज़े संग मरमर की जालियों से बंद हैं। दक्खिनी दरवाज़े में किवाड़ लगे हैं, फ़र्श निहायत ख़ुशनुमा और पुर तकल्लुफ़ संग मरमर के अंदर संगे अबरी, संगे मूसा वग़ैरा की पच्चे कारी से क़त्आ दार बना हुआ है। मज़ार मुबारक के कटहरे के ऊपर सीप की नफ़ीस व बारीक पच्चे कारी का छप्पर खट है जो ख़ुसूसियत के साथ देखने के काबिल और लाइके दाद है।

हुजरे के अतराफ़ में 11 फ़ुट चौड़ी ग़ुलाम गर्दिश है जिसके चारों कोने में 5-5 दर हैं जो संग मरमर की निहायत ख़ूबसूरत, बारीक और मुख़्तलिफ़ तरीक़े की जालियों से जिनकी नफ़ासत व नज़ाकत काबिले दीद यानी देखने के क़ाबिल है। येह बंद हैं सिर्फ दक्खिनी जानिब के दर्मियानी हिस्से में दरवाज़ा है जिसमें आबनूसी किवाड़ लगे हैं। रौज़ा की बाहरी दीवारों पर जो ग़ुलाम गर्दिश में हैं खत्ते नस्ख़ में आयाते कुरआनी के ऐसे ख़ुश ख़त कत्बे कुंदा हैं जिनकी तारीफ़ बयान में नहीं आ सकती। कत्बों के ऊपर ख़ुशनुमा ताकचे और गुलदस्ते बने हैं अगर्चे इन कत्बों और गुलदस्तों का तलाई काम अब बाक़ी नहीं रहा लेकिन नमूना के तौर पर दक्खिनी जानिब के तीन कत्बों और चार गुलदस्तों पर सोने के पानी से अज़ सरे नौ जिला की गई है। दरवाज़े की पेशानी पर तारीख़ लिखी हुई है।

ग़ुलाम गर्दिश के इस दरवाज़े के आगे एक ख़ुशनुमा सायेबान बना है जिसका फ़र्श और सुतून बहुत ख़ूबसूरत हैं और जगह जगह बारीक मंबत कारी की हुई है। इस सायेबान के आगे संग मरमर का छोटा सा चबूतरा है और उस के सामने यानी दरगाह के सेहन में 77 फ़ुट × 58 फ़ुट संग मरमर का फ़र्श है जिस से मिला हुआ पुख़्ता और मज़बूत हौज़ फ़व्वारा के साथ है।

रौज़ा का गुंबद संग मरमर का है जो बजाये पच्चे कारी के गुंबद के 1866 ईस्वी में मिस्टर मेंसल ज़िला के कलैक्टर के हुक्म से बनवाया गया था।

रौज़ा हज़रत शैख सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





रौज़ा नवाब इस्लाम ख़ान चिश्ती

नवाब इस्लाम ख़ान का अस्ली नाम शैख़ अलाउद्दीन था। येह शैख़ बदरुद्दीन के बेटे और हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के पोते थे। जहांगीर के ज़माने में बंगाला के सूबेदार और मशहूर अमीर लोगों में से थे। 1022 हिजरी बमुताबिक़ 1613 ईस्वी में वफ़ात पाई। हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के रौज़ा के क़रीब जो दूसरा आलीशान गुंबद है उस के अंदर नवाब इस्लाम ख़ान का मज़ार मौजूद है। इस गुंबद के अंदर और बरामदों में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान के मर्दों और मशहूर खुल्फ़ा की क़ब्रें हैं। पच्छिमी बरामदे में तीन हुजरे हैं :

(1)--- पहले हुजरा में नवाब मुकर्रम ख़ान (शैख़ अब्दुस्समद इब्न शैख़ बा यज़ीद इब्न शैख़ अहमद इब्न शैख़ सलीम चिश्ती) रहमतुल्लाह अलैह

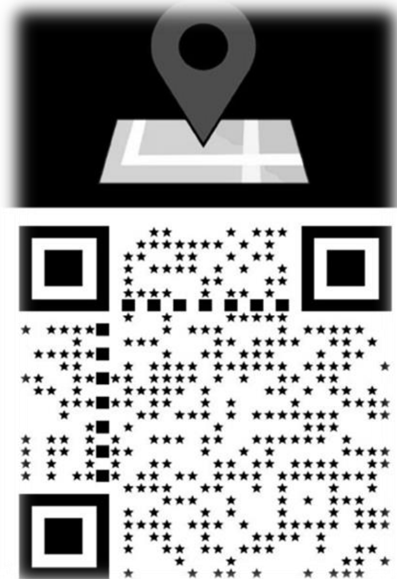
(2)--- दर्मियानी हुजरे में नवाब मोहतशिम ख़ान (शैख़ क़ासिम इब्न शैख़ बदरुद्दीन इब्न शैख़ सलीम चिश्ती) रहमतुल्लाह अलैह

(3)--- तीसरे हुजरे में जो दक्खिनी और पच्छिमी जानिब है हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के मशहूर ख़ुल्फ़ा और खानकाह के मोहतमिम शैख़ हाजी हुसैन के मज़ारात हैं।

इस गुंबद के पूर्वी जानिब जो क़ब्रिस्तान है वो **"याराने चबूतरा"** के नाम से मौसूम है और इस में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के खुल्फ़ा और बहुत से बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात मौजूद हैं।



रौज़ा नवाब इस्लाम ख़ान चिश्ती के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



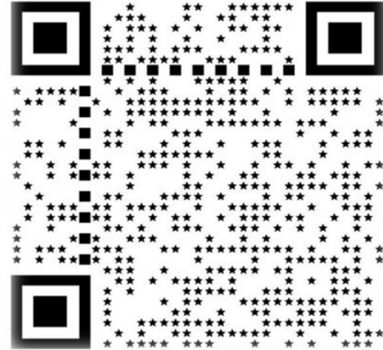
झालरा

येह मस्नूई यानी बनाई हुई झील जो बुलंद दरवाज़ा के दक्खिनी और पच्छिमी जानिब मौजूद है नवाब क़ुतुबुद्दीन ख़ान की बनवाई हुई और **झालरा** के नाम से मौसूम है, इस में दरगाह शरीफ़ के सेहन का बरसाती पानी जमा रहता है और कभी नहीं सूखता। इस की इमारत पुख़्ता और मज़बूत और हश्त यानी आठ पहल है जिसका हर गोशा 34 फ़ुट है, पूर्वी जानिब पानी तक पहुंचने के वास्ते सीढ़ियां बनी हैं। पहले दरगाह की मुल्हिक़ा दीवार से तैराक यानी तैरने वाले लोग इस में कूद कर अपना कमाल दिखाया करते थे मगर अब इस की मुमानअत हो गई है।



झालरा के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।







मस्जिद क़दीम या मस्जिद संग तराश

दरगाह शरीफ़ के पच्छिमी जानिब थोड़े ही फ़ासिले पर येह मस्जिद मौजूद है जो फ़तेहपुर की सब इमारतों से पुरानी है इस की तामीर के बारे में येह रिवायत मशहूर चली आती है कि जिस ज़माना में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह उस ग़ार के अंदर जो इस मस्जिद के हुजरे के अंदर अब तक मौजूद है इबादत फ़रमाया करते थे, संग तराशों ने जो पहाड़ पर चक्कियां बनाने आया करते थे आप रहमतुल्लाह अलैह की कुछ करामत देख कर आप रहमतुल्लाह अलैह के वास्ते तामीर करा दी थी।

येह मस्जिद 51 फ़ुट लंबी और 12 फ़ुट चौड़ी है, सुतून इस तर्तीब से नसब हैं कि मस्जिद दो बराबर के हिस्सों में तक़सीम हो गई है अंदरूनी दर्जा में उत्तरी जानिब 10 फ़ुट लंबा हुजरा बना है जिसके अंदर वो मुताबर्रिक ग़ार है जिसके अंदर बैठ कर हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह इब्तिदाई ज़माने में इबादत और रियाज़त फ़रमाया करते थे, मस्जिद के बाहरी पेशानी पर आयाते कुरआनी, कलिमए तय्यिबा, और एक हदीस शरीफ़ लिखी हुई है, आगे 35 फ़ुट चौड़ा सेहन है।

मकान हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती

येह मुताबर्रिक मकान अब मुंशी शैख़ अज़ीज़ुद्दीन साहिब पीर ज़ादा की मिल्कियतमें और उनकी रिहाइश गाह है, इस में उत्तरी जानिब जो दालान हैं वो **मजलिसी दालान** के नाम से मौसूम और ख़ास कर मुताबर्रिक समझा जाता है क्योंकि यही हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का क़ियाम गाह था। मकान की छत पर एक छोटा सा कमरा बना है वो **मंडफ़** के नाम से मशहूर और हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती

रहमतुल्लाह अलैह का चिल्ला गाह है, 20 रमज़ान को इसी कमरा में तबर्रुकात की ज़ियारत कराई जाती है।

ख़ानकाह हज़रत शैख सलीम चिश्ती

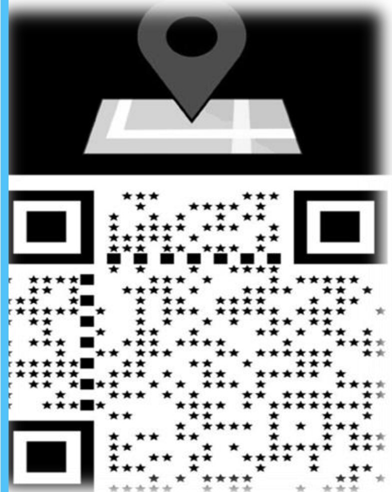


रंग महल

येह महल जो हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के मकान के क़रीब मौजूद है शहज़ादा सलीम (यानी जहांगीर) और शहज़ादा मुराद की पैदाइश गाह है येह भी शैख़ तजम्मुल हुसैन साहिब और शैख़ अज़ीज़ुद्दीन साहिब की मिल्कियत में था। 1905 ईस्वी में इसका मुआवज़ा अदा करके इस यादगार को काबिले तहफ़्फ़ुज़ समझ कर महकमा आसारे कदीमा में ले लिया गया है और इस की मरम्मत भी करा दी गई है, इस की बची हुई इमारत और नक़्शो निगार से ज़ाहिर होता है कि येह इस्म बा मुसम्मा और रंगा रंग के नक़्शो निगार और ख़ुशनुमा गुल

कारी से मुज़य्यन और मुरस्सा यानी आरस्ता था और इस में निहायत नफ़ीस मुनक़्क़श पत्थर लगाया गया था।

रंग महल के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



मक़बरा मख़दूम साहिब

नगर की आबादी के बाहर भरतपुर की सड़क पर और दिल्ली दरवाज़े से ठीक शुमाल (यानी उत्तर) की जानिब एक मक़बरा मौजूद है जो मख़दूम साहिब के मक़बरा के नाम से मौसूम है। इस के चारों तरफ़ सीकरी की पहली आबादी के खन्डर दिखाई देते हैं। येह दर अस्ल मख़दूम शैख ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह थी जो आबादी के बीच में मौजूद थी। अब येह क़ब्रिस्तान है, दर्मियान में शैख़ ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का संगीन रौज़ा बना हुआ है जिसकी जालियाँ लाल पत्थर की और गुंबद गच का है। तर्ज़े इमारत बता रहा है कि मुग़्लिया ज़माने से बहुत पहले का बना हुआ है। ख़ानकाह की चार दीवारी और इर्द गिर्द के दालान और हुजरे

शिकस्तगी के नज़र हो चुके हैं। सिर्फ कहीं कहीं की नमूद बाक़ी रह गई है। रौज़ा मुबारक चौकोर शक्ल का है जिसका हर कोना 14 फ़ुट 8 इंच है।

शुमाल (यानी उत्तर) व जुनूब (यानी दक्खिन) और मशरिक़ (यानी पूरब) में तीन तीन दर हैं जो संगीन जालियों से बंद हैं। सिर्फ जुनूब (यानी दक्खिन) का दर्मियानी दर खुला हुआ है, गुंबद के नीचे दो मज़ार हैं जिनके संगीन तावीज़ पुरानी बनावट के हैं। पच्छिमी तावीज़ पर कलिमा तय्यिब और अल्लाह और पूर्वी तावीज़ पर सिर्फ अल्लाह लिखा हुआ है। पच्छिमी मज़ार मुबारक मख़दूम शैख ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का बताया जाता है। पूर्वी मज़ार के बारे में कुछ हाल नहीं मालूम हो सका। सीकरी और क़ुर्बो जवार यानी आस पास के लोगों से मख़दूम शैख ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के हालात पूछे तो जोशे एतिक़ादी की बहुत सी रिवायतें मालूम हुईं। लेकिन सिवाए नाम के कि वो भी बहुत मुश्किल से मालूम हो सका और कुछ हाल ना खुला। इस के बाद बहुत सी किताबें देखीं, जवाहिरे फ़रीदी से सिर्फ इतना पता चला कि मख़दूम शैख ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का विसाल मुबारक 29 जुमादस्सानी 721 हिजरी ब मुताबिक़ 1321 ईस्वी को हुआ। जो नासिरुद्दीन ख़ुसरो ख़ां का ज़माना था।

ख़ानक़ाह के मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब एक वसीअ मस्जिद थी जो मुन्हदिम हो गई यानी गिर गई है। मगर ख़ुश क़िसमती से इस के कत्बा का एक टुकड़ा अब तक मौजूद है इस के अक्सर हुरूफ़ पढ़ने में नहीं आते लेकिन मस्जिद और तारीख़ साफ़ पढ़ ली गई वो येह है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ला इलाहा इल्लल्लाहु

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

मस्जिद सन अरबआ अशर व सबआ मिअत

अल ख़ामिस वल ईशरीन अल रमज़ान

इस से मालूम होता है कि इस मस्जिद की तामीर 25 रमज़ान 714 हिजरी ब मुताबिक़ 1314 ईस्वी को ख़त्म हुई । यानी मख़दूम शैख ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात से सात आठ साल पहले सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के ज़माने में येह मस्जिद तामीर हुई थी।

रौज़ा मुबारक के इर्द गिर्द बहुत सी क़ब्रें हैं जिनके संगीन और ख़ूब सूरत तावीज़ साफ़ बता रहे हैं कि हम ज़ी मर्तबा बुज़ुर्गों के आराम गाह हैं, मगर कत्बा से अक्सर ख़ाली हैं और जिन पर कत्बा है भी उन पर भी कलिमा तय्यिबा, अल्लाहु अकबर, ला तकनतू मिन रहमतिल्लाह, आयतुल कुर्सी वग़ैरा लिखी हुई है । नामो निशान का कुछ पता नहीं । निहायत शौक़ो ज़ौक़ से एक एक क़ब्र को देखा तो तीन गुमनामों का नाम मिला। मिन जुमला उनके गुंबद के गोशए शुमाल (यानी उत्तर) व मग़रिब (यानी पच्छिम) में एक तर्ज़ के बराबर बराबर चार तावीज़ ज़मीन दोज़ हैं उनमें एक पर कलिमा तय्यिबा के नीचे येह इबारत अरबी ख़त में लिखी हुई है:

वफ़ात याफताह शैख़ नज्मुद्दीन आला फ़ी शहरि रमज़ान ब तारीख़ नवाज़ दहुम सन सबआ ख़मसीन तिसआ मिअत (19 रमज़ान 957 हिजरी ब मुताबिक़ 1550 ईस्वी)

गोशाए जुनूब (यानी दक्खिन) व मशरिक़ (यानी पूरब) में चार दीवारी के क़रीब दो तावीज़ों पर कलिमा तय्यिबा के नीचे येह इबारत लिखी है:

हाजी बेगम कूच शैख़ अज़ीज़ुर्रहमान ब तारीख़ 18 शहर रबीउल आख़िर 1011 हिजरी ब मुताबिक़ 1602 ईस्वी

दूसरी क़ब्र पर येह इबारत लिखी है :

हाजी शैख़ अज़ीज़ुर्रहमान इब्न शैख़ अब्दुर्रहमान वाइज़

येह शैख़ अब्दुर्रहमान इसी सीकरी के रहने वाले और सुल्तान सिकन्दर लोदी के मुक़र्रबाने ख़ास में से थे, हमेशा बादशाह के साथ रहते थे।

इस मक़बरे के सामने भरतपुर की सड़क की शुमाली यानी उत्तरी पटरी पर एक छोटा सा गुंबद बना है जिसके अंदर एक क़ब्र है और इसी के बराबर एक बच्चे की क़ब्र है जिसका तावीज़ मुनक़्क़श और बहुत ख़ूबसूरत है और इस पर आयतुल कुर्सी लिखी हुई है।

गुंबद गच का है और इस के नीचे जो पत्थर लगे हैं उन पर चारों तरफ़ **या अल्लाह या फ़त्ताह** लिखा हुआ है। क़ुर्बो जवार यानी आस पास में मूसा गुंबद तक बहुत सी क़ब्रें हैं।

मकबरा मख्दूम साहिब के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





मूसा गुंबद

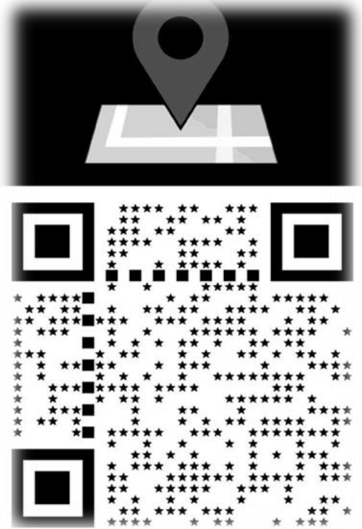
हज़रत शैख़ मूसा रहमतुल्लाह अलैह हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के बड़े भाई और नवाब इब्राहीम ख़ान के बाप हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह का मक़बरा सीकरी में तेराह मोरियों के पास भरतपुर की सड़क पर मौजूद है और मूसा गुंबद के नाम से मौसूम है और फ़तेहपुर से दिखाई देता है। इसे अकबर के ज़माने में आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे नवाब इब्राहीम ख़ां ने तामीर कराया था। उस के क़ुर्बो जवार यानी आस पास के निशानात से ज़ाहिर होता है कि पहले इस के इर्द गिर्द चार दीवारी थी और इस के अंदर कुछ और इमारत भी थी जो मुन्हदिम हो

गई यानी गिर गई है। अब मक़बरा का सिर्फ दर्मियानी संगीन गुंबद बाक़ी है जो 3 फ़ुट बुलंद चबूतरे पर बना हुआ है।

बाहरी जानिब चारों तरफ़ एक एक मेहराब दार दर, दर्मियान में और इस के दोनों जानिब नीचे ऊपर दो दो मेहराब दार दरों के निशान बने हैं। दर्मियानी दरों के दोनों बालाई सिरों पर बजाये फूलों के इस्मे **अल्लाह** निहायत ख़ुश ख़त से लिखा है। सबसे ऊपर चारों तरफ़ मुनक़्क़श कंगूरे मुज़य्यन हैं। गुंबद गच का है, चारों तरफ़ दरवाज़े हैं। जिनमें जुनूबी यानी दक्खिनी दरवाज़ा खुला हुआ है। बाक़ी बंद हैं। पहले उनमें जालियाँ लगी थीं। अब सिर्फ पूर्वी दरवाज़े में किसी क़दर टुकड़ा जाली का बाक़ी रह गया है। गुंबद के नीचे का रकबा 24 फ़ुट 10 इंच X 24 फ़ुट 10 इंच है। और 4 फ़ुट के क़रीब दरवाज़ों का आसार है। दरवाज़ों के दर्मियान में दो दो बड़े ताक़ बने हैं। इस के ऊपर हश्त यानी आठ पहल हिस्सा है जिसके हर पहल में मेहराब दार सींचियों के निशान हैं इस से ऊपर 16 पहल क़ाईम किए हैं जिसके हर पहल में मेहराब दार खिड़कियों के निशान बने हुए हैं। इस के ऊपर संगीन लदाओ की छत है जिसे लाल पत्थर के दर्मियान में सफ़ैद पत्थर से 16 फाँकें बना कर ख़ुशनुमा बनाया गया है। दर्मियान में एक संगीन ख़ूबसूरत फूल नसब है, गुंबद में कुल 16 संगीन तावीज़ हैं, 8 बड़े और 8 बच्चों के हैं मगर किसी पर कत्बा नहीं है। मशरिक़ (यानी पूरब) में एक चौखंडी के अंदर जो सवा 7 x सवा 7 फ़ुट है एक तावीज़ है। क़ुर्बो जवार यानी आस पास में और भी कई संगीन तावीज़ पड़े हुए हैं। मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब एक पुख़्ता कुँआं मौजूद है। बयान किया जाता है कि सीकरी में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती

रहमतुल्लाह अलैहि और उन के वालिदैन यानी माँ बाप का मकान इसी मक़ाम पर था जहां अब येह मक़बरा मौजूद है।

मूसा गुंबद के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





आगरा वालों के लिए 12 किताबों का तोहफा

आगरा वाले आशिकाने औलिया के लिए खुशखबरी ! आगरा के औलियाए किराम की सीरत पर मुश्तमिल 20 किताबों को हासिल कर के पढ़ें और दूसरों को तकसीम कर के फैज़ाने औलिया को आम करें।

(1) आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत
(2) सरताजे आगरा और 29 औलियाए किराम की सीरत
(3) आगरा के गौस शाह मुबारक गौस और 8 औलियाए किराम की सीरत
(4) लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की सीरत
(5) हींग की मंडी व नाई की मंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत
(6) बेलनगंज व अतराफ़ के 29 औलियाए किराम की सीरत
(7) जमना पार (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
(8) मिर्ज़ा खानदान के 4 औलियाए किराम की सीरत
(9) कब्रिस्तान पंचकुइयां के 8 औलियाए किराम की सीरत
(10) कब्रिस्तान पीर गिलानी के 5 औलियाए किराम की सीरत
(11) ताजगंज (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
(12) शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की सीरत
(13) सराये ख्वाजा व अतराफ़ के 6 औलियाए किराम की सीरत
(14) नई बस्ती व दीवान खाना के 8 औलियाए किराम की सीरत
(15) सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की सीरत
(16) हज़रत अमजद अली शाह कादरी और 10 औलियाए किराम की सीरत
(17) आगरा के असातिज़ा और तलाबा की सीरत
(18) आगरा की हिस्ट्री
(19) शैख सलीम चिश्ती की सीरत
(20) फतेहपुर सीकरी की हिस्ट्री

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल करें :8808693818

सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्वए नूरे ख़ुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिराग़े पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
ख़ानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिश्ती सुहर्वर्दी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते ख़ुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकूं का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की ख़ाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की ख़ाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औक़ात क्या बेख़ुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं

शायर :वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजिस्थान

बोस्ताने ख़ैर ला कर बोस्ताँ महका दिया

बोस्ताने ख़ैर ला कर बोस्ताँ महका दिया
अहले सुन्नत के अकीदे को बड़ा चमका दिया

भूल बैठे दौलते दुनिया के चक्कर में जिन्हें
उन बुज़ुर्गों का तआरुफ़ आप ने करवा दिया

आगरा वालों पे हज़रत का बड़ा ऐहसान है
रब ने उनके हाथ से सच का अलम लहरा दिया

निस्बते मदनी से यूँ तो जल रहे थे पेशतर
और क़लम ने फिर जलन को और भी भड़का दिया

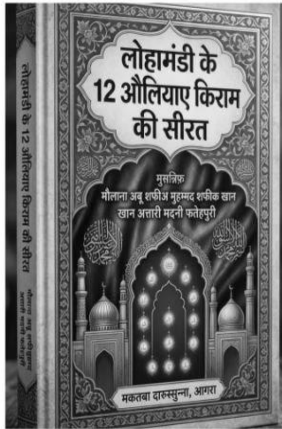
हक़ लिखा, बेबाक लिखा, ख़ौफ़े बातिल कुछ ना था
सच के शोअलों से हर इक फ़ितने को यूँ धमका दिया

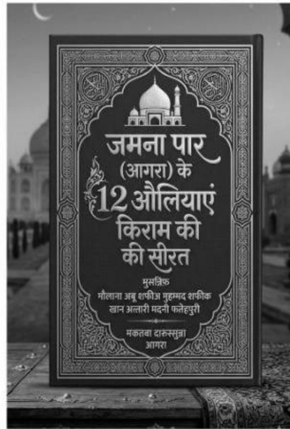
इस शफ़ीक़े क़ादरी का रख तरो ताज़ा क़लम
जिस ने भूले रास्तों को रास्ते पे ला दिया

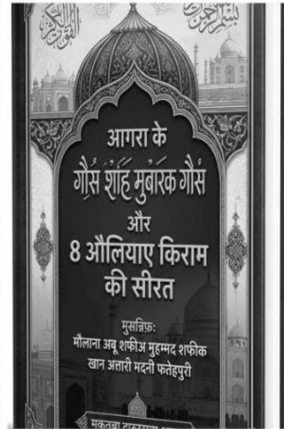
कब किसी मंसब की चाहत, कब सिले की आरज़ू
सिर्फ़ निस्बत ने येह सारा काम ही करवा दिया

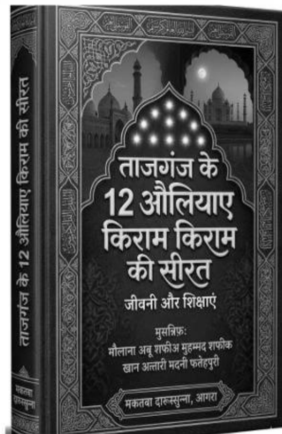
जम रही थी धूल माज़ी के तख़य्युल की मगर
किस ने बेख़ुद आगरा को आईना दिखला दिया

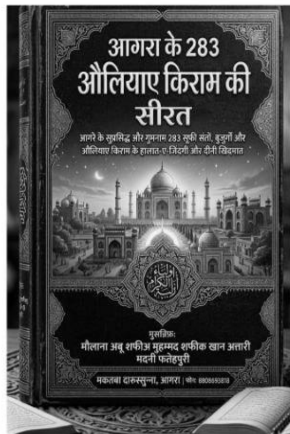
शायर : वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजिस्थान

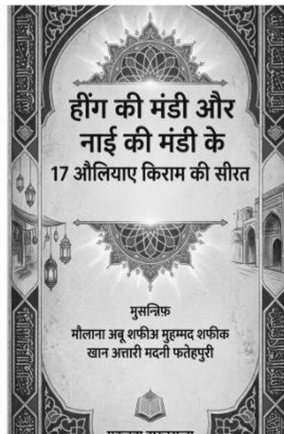

लोहामंडी के
12 औलियाए किराम
की सीरत
मुसन्निफ़
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक खान
खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना, आगरा

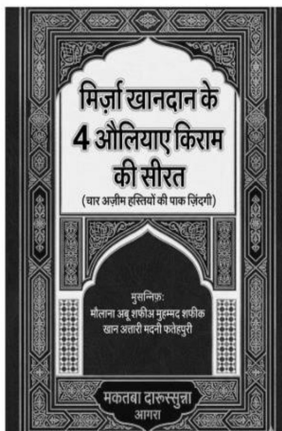

जमना पार
(आगरा) के
12 औलियाएं
किराम की
की सीरत
मुसन्निफ़
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक
खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना
आगरा

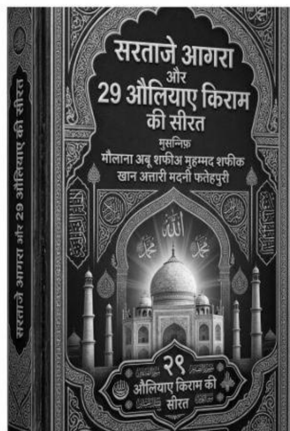

आगरा के
गौसे शाह मुबारक गौस
और
8 औलियाए किराम
की सीरत
मुसन्निफ़:
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक
खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

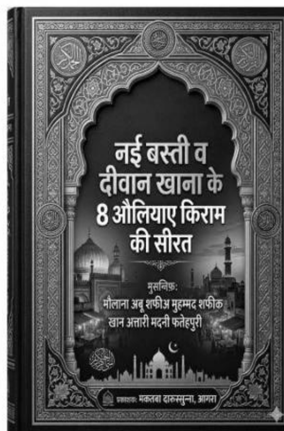

ताजगंज के
12 औलियाए
किराम किराम
की सीरत
जीवनी और शिक्षाएं
मुसन्निफ़:
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक
खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना, आगरा


आगरा के 283
औलियाए किराम की
सीरत
मुसन्निफ़:
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक खान अत्तारी
मदनी फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना, आगरा


हींग की मंडी और
नाई की मंडी के
17 औलियाए किराम की सीरत
मुसन्निफ़
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक
खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी


मिर्ज़ा खानदान के
4 औलियाए किराम
की सीरत
(चार अज़ीम हस्तियों की पाक ज़िंदगी)
मुसन्निफ़:
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक
खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना
आगरा


सरताजे आगरा
और
29 औलियाए किराम
की सीरत
मुसन्निफ़
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक
खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
सरताजे आगरा और 29 औलियाए की सीरत


नई बस्ती व
दीवान खाना के
8 औलियाए किराम
की सीरत
मुसन्निफ़:
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक
खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना, आगरा